

国家彩票公益金资助

大字版

围炉夜话

经典常读

【清】王永彬著
李颖注

中国盲文出版社

经典常读

围炉夜话

【清】王永彬 著

李 颖 注

中国盲文出版社

图书在版编目 (CIP) 数据

围炉夜话 (大字版) / (清) 王永彬著; 李颖注. —北京: 中国盲文出版社, 2015. 7
ISBN 978 - 7 - 5002 - 6099 - 8

I. ①围… II. ①王… ②李… III. ①个人—修养—中国—清代 ②《围炉夜话》—注释 IV. ①B825

中国版本图书馆 CIP 数据核字 (2015) 第 152290 号

围炉夜话

作 者: (清) 王永彬 著 李颖 注

责任编辑: 亢 森

出版发行: 中国盲文出版社

社 址: 北京市西城区太平街甲 6 号

邮政编码: 100050

印 刷: 北京中科印刷有限公司

经 销: 新华书店

开 本: 700 × 1000 1/16

字 数: 45 千字

印 张: 6.75

版 次: 2015 年 11 月第 1 版 2015 年 11 月第 1 次印刷

书 号: ISBN 978 - 7 - 5002 - 6099 - 8/B · 263

定 价: 13.00 元

销售服务热线: (010) 83190297 83190289 83190292

前　　言

《围炉夜话》一书，作者为清人王永彬。王永彬（1792—1869），字润芳，号宜山，人称宜山先生，湖北宜都人。王氏生于乾隆壬子年正月廿三日亥时，歿于同治己巳年正月二十五日巳时，享年七十有八，一生经历了乾隆、嘉庆、道光、咸丰、同治五个王朝。年少时曾一度面临辍学，后发奋入县学读书。不喜科考，很晚才获岁贡生科名。曾任修职郎，候选教谕，后归乡授徒。王氏治学甚广，于四部之学，皆追溯源流，反复揣摩。一生勤于著述，著有《桥西山馆杂著八种》及其他诗文作品多部。

王氏涉猎广泛，在授业著述之余，经史诸子书法医学皆习，尤好吟诗，其同郡文友王柏心在《勅授修职郎宜山王公传》中载：“公著述外，尤好吟咏，与

2 围炉夜话

高安周柳溪、彝陵（夷陵）罗梦生结诗社，号吟坛三友。”其为人不爱荣华富贵，生性纯茂冲远。光绪《荆州府志·卷五十七·艺文志》载：“王永彬，字宜山，岁贡生，性孝友，隐居教授。邑令朱锡绶耳闻其名，虚心造访，永彬凿坯而遁。”

《围炉夜话》自问世以来，一直盛传不衰，成为人们案头的必备之书。它与明代洪应明撰的《菜根谭》、陈继儒撰的《小窗幽记》并称为“处世三大奇书”。

《围炉夜话》是明清时代众多的格言体撰述中的一种，也是一部旨在劝世之作。作者分别从道德、修身、读书、悟道、教子、忠孝、勤耕诸方面谈了儒家经世致用、立德、立功、立言的大道理，所阐发的也不外是儒家学说中的封建伦理中的仁、义、礼、智、信这五种道德规范。

本书难能可贵之处在于作者对当时世道人心之

险、道德日益沦丧之批判：“风俗日趋于奢淫，靡所底止，安得有敦古朴之君子，力挽江河；人心日丧其廉耻，渐至消亡，安得有讲名节之大人，光争日月”（第11则）。其揭露与鞭挞，颇见力度。另者，本书中的大部分观点，如勤勉劳作、节俭持家、敬老爱幼、持身自律等，对于我们今天治家理财、教育子女等，也有一定的借鉴意义。

本书在写作上，语言简括，寓意深远，晓畅易记，是儒学箴言中较为优秀之作。

目 录

| | |
|----|---|
| 一 | 1 |
| 二 | 1 |
| 三 | 2 |
| 四 | 2 |
| 五 | 2 |
| 六 | 3 |
| 七 | 3 |
| 八 | 4 |
| 九 | 4 |
| 一〇 | 5 |
| 一一 | 5 |
| 一二 | 6 |
| 一三 | 6 |

2 围炉夜话

| | |
|----|----|
| 一四 | 8 |
| 一五 | 9 |
| 一六 | 9 |
| 一七 | 10 |
| 一八 | 11 |
| 一九 | 11 |
| 二〇 | 12 |
| 二一 | 12 |
| 二二 | 12 |
| 二三 | 13 |
| 二四 | 13 |
| 二五 | 14 |
| 二六 | 14 |
| 二七 | 15 |
| 二八 | 15 |
| 二九 | 15 |

目 录 3

| | | |
|----|-------|----|
| 三〇 | | 16 |
| 三一 | | 16 |
| 三二 | | 16 |
| 三三 | | 18 |
| 三四 | | 19 |
| 三五 | | 19 |
| 三六 | | 20 |
| 三七 | | 20 |
| 三八 | | 20 |
| 三九 | | 21 |
| 四〇 | | 21 |
| 四一 | | 22 |
| 四二 | | 22 |
| 四三 | | 22 |
| 四四 | | 23 |
| 四五 | | 24 |

4 围炉夜话

| | |
|----|----|
| 四六 | 24 |
| 四七 | 24 |
| 四八 | 24 |
| 四九 | 25 |
| 五〇 | 26 |
| 五一 | 27 |
| 五二 | 27 |
| 五三 | 27 |
| 五四 | 28 |
| 五五 | 28 |
| 五六 | 29 |
| 五七 | 29 |
| 五八 | 29 |
| 五九 | 30 |
| 六〇 | 30 |
| 六一 | 31 |

目 录 5

| | |
|----|----|
| 六二 | 31 |
| 六三 | 32 |
| 六四 | 33 |
| 六五 | 33 |
| 六六 | 33 |
| 六七 | 34 |
| 六八 | 35 |
| 六九 | 35 |
| 七〇 | 35 |
| 七一 | 36 |
| 七二 | 36 |
| 七三 | 37 |
| 七四 | 37 |
| 七五 | 38 |
| 七六 | 38 |
| 七七 | 39 |

6 围炉夜话

| | |
|----|----|
| 七八 | 39 |
| 七九 | 39 |
| 八〇 | 40 |
| 八一 | 41 |
| 八二 | 41 |
| 八三 | 42 |
| 八四 | 42 |
| 八五 | 43 |
| 八六 | 43 |
| 八七 | 44 |
| 八八 | 44 |
| 八九 | 44 |
| 九〇 | 45 |
| 九一 | 45 |
| 九二 | 46 |
| 九三 | 46 |

目 录 7

| | | |
|-----|-------|----|
| 九四 | | 47 |
| 九五 | | 47 |
| 九六 | | 47 |
| 九七 | | 48 |
| 九八 | | 48 |
| 九九 | | 49 |
| 一〇〇 | | 49 |
| 一〇一 | | 49 |
| 一〇二 | | 49 |
| 一〇三 | | 50 |
| 一〇四 | | 51 |
| 一〇五 | | 51 |
| 一〇六 | | 52 |
| 一〇七 | | 52 |
| 一〇八 | | 52 |
| 一〇九 | | 53 |

8 围炉夜话

| | |
|-----|----|
| 一一〇 | 53 |
| 一一一 | 53 |
| 一一二 | 54 |
| 一一三 | 55 |
| 一一四 | 56 |
| 一一五 | 56 |
| 一一六 | 57 |
| 一一七 | 57 |
| 一一八 | 57 |
| 一一九 | 58 |
| 一二〇 | 58 |
| 一二一 | 59 |
| 一二二 | 59 |
| 一二三 | 60 |
| 一二四 | 61 |
| 一二五 | 61 |

目 录 9

| | | |
|-----|-------|----|
| 一二六 | | 61 |
| 一二七 | | 62 |
| 一二八 | | 62 |
| 一二九 | | 62 |
| 一三〇 | | 63 |
| 一三一 | | 63 |
| 一三二 | | 64 |
| 一三三 | | 64 |
| 一三四 | | 65 |
| 一三五 | | 65 |
| 一三六 | | 65 |
| 一三七 | | 66 |
| 一三八 | | 66 |
| 一三九 | | 66 |
| 一四〇 | | 67 |
| 一四一 | | 68 |

10 围炉夜话

| | |
|-----|----|
| 一四二 | 68 |
| 一四三 | 69 |
| 一四四 | 69 |
| 一四五 | 69 |
| 一五六 | 70 |
| 一五七 | 70 |
| 一五八 | 71 |
| 一五九 | 71 |
| 一五〇 | 71 |
| 一五一 | 72 |
| 一五二 | 72 |
| 一五三 | 73 |
| 一五四 | 73 |
| 一五五 | 74 |
| 一五六 | 74 |
| 一五七 | 75 |

目 录 11

| | | |
|-----|-------|----|
| 一五八 | | 75 |
| 一五九 | | 76 |
| 一六〇 | | 76 |
| 一六一 | | 77 |
| 一六二 | | 78 |
| 一六三 | | 78 |
| 一六四 | | 78 |
| 一六五 | | 79 |
| 一六六 | | 79 |
| 一六七 | | 79 |
| 一六八 | | 80 |
| 一六九 | | 80 |
| 一七〇 | | 81 |
| 一七一 | | 81 |
| 一七二 | | 82 |
| 一七三 | | 82 |